कश्मीरी चित्रकार मास्टर संसार चंद बारू के चित्रों का

कलात्मक अध्ययन

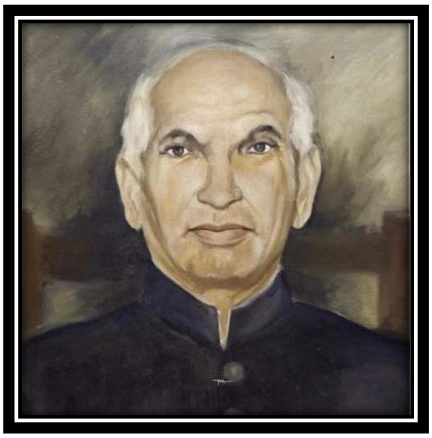

चित्रकला विषय में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु

प्रस्तावित रूपरेखा

शोध निर्देशक
डॉ. विजय कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर

शोध छात्रा
गुरुप्यारी भदौरिया

ड्राइंग एंड पेंटिंग विभाग, कला संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा - 282005

2024

कश्मीरी चित्रकार मास्टर संसार चंद बारू के चित्रों का कलात्मक अध्ययन

विषय-प्रवेश

शोध संकल्पना

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन

परिकल्पना

उद्देश्य

चर

कार्य प्रणाली

अनुसन्धान अभिकल्प

प्रदत्त संकलन

प्राथमिक स्त्रोत

द्वितीयक स्त्रोत

प्रतिदर्श का आकार

सीमाएँ

निष्कर्ष

आधुनिक युग में प्रासंगिकता

शोध संकल्पना

भारतीय संस्कृति का इतिहास बहुत विस्तृत है, जो आदिकाल से चला आ रहा है और विविध क्षेत्रों में इसका इतना उच्च विकास हुआ है कि आज भी विश्व भारतीय संस्कृति से अनेक क्षेत्रों में प्रेरणा ग्रहण करता है। किसी भी देश की संस्कृति का अध्ययन करने के लिए उस देश की कलाओं का ज्ञान होना अति महत्वपूर्ण है ,प्राचीन चिंतको ने जीवन का लक्ष्य, आनंद की अनुभूति माना है, हजारों वर्ष पूर्व मानव अपने जीवन में मूर्तिकला व चित्रकला से सम्बध रखता था, साथ ही कला उनके जीवन का विशेष अंग थी । संस्कृति की रचना निरंतर संचरित होती रहती है, कलात्मक विकास में मुख्यत: ललित कला व उपयोगी कला के अंतर्गत चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्य कला, संगीत कला व साहित्य कला का विशेष महत्व है । जो मनुष्य के मन को सुन्दर व व्यवस्थित बनाती है, कला के अलावा कोई भी ऐसा माध्यम नहीं

है, जो जीवन को भेद कर उसके मूल को प्रस्तुत कर सके।

मनुष्य के पृथ्वी पर जन्म लेने के पश्चात प्रकृति की महान शक्तियों के सम्मुख मानव की अंतःचेतना जाग्रत हुयी, इसके साथ ही मानव ने सृजनात्मक प्रवृति की चेष्टा की। इसके फलस्वरूप मनुष्य की ललित भावनायें जाग उठी और उसने अनगढ़ पत्थरों के यंत्रों, औजारों और तुलिका से बनी टेढ़ी- मेढ़ी रेखाकृतियों के रूप में गुफाओं और चट्टानों की भित्तियों पर चित्र अंकित किए। आदिकाल से लेकर अब तक मानव रेखा या आकार एवं तुलिका के द्वारा अपनी भावनाओं को कैनवास व भित्ति चित्रण और अन्य कलाओं के माध्यम से व्यक्त करता आ रहा है। कई विद्वानों एवं दार्शनिक ने कला को अपने विचारों से विभिन्न प्रकार से व्यक्त किया है । जैसे कि भरतमुनि, आनन्द-वर्धन, अभिनव गुप्त इत्यादि। भरतमुनि बहुत ही प्रतिभाशाली व महान दार्शनिक थे, इन्होने रस सिद्धांत को प्रतिपादित किया यह सिद्धांत भरतमुनि द्वारा रचित ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में बताया गया है । भावों द्वारा रस की उत्त्पत्ति उसकी अनुभूत्ति सौंदर्य का सर्वोच्च स्वरुप कहा गया है । भरतमुनि ने अपने रचित ग्रंथ के षष्ठ एवं सप्तम अध्यायों में रस का सम्पूर्ण वर्णन किया है। इसी क्रम में आनन्द-वर्धन भी एक महान दार्शनिक थे, जिन्होंने ध्वनि सिद्धांत के नाम से एक नया सिद्धांत प्रतिपादित किया। यह कश्मीर के निवासी ध्वनि संम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य थे। इन्होंने कृति ध्वन्यालोक बहुत प्रसिद्ध है, ऐसा माना जाता है कि ध्वनि संम्प्रदाय का सम्बन्ध मुख्यतः शब्द शक्ति व अर्थ विज्ञान से है। अर्थ विज्ञान भाषा दर्शन होते हुए, काव्य शास्त्र और सामान्यतः सौंदर्य शास्त्र के लिए महत्वपूर्ण है,अभिनय व रंग मंच के माध्यम से रस के स्वरुप व उत्त्पत्ति के बारें में अति विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है, भावों द्वारा रस की उत्त्पत्ति उसकी अनुभूत्ति सौंदर्य का सर्वोच्च स्वरुप कहा गया है इनके अलावा अभिनव गुप्त ने भी रस को आनंद कहा है। भारतीय सौंदर्य दर्शन में अभिनव गुप्त का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इनको भरत मुनि के बाद भारतीय सौंदर्य दर्शन के प्रवर्तक के रूप में जाना जाता है। रस का सम्बन्ध नाट्यकला या काव्यकला से नहीं है वरन् सभी कलाओं के आधारभूत तत्व के रूप में परिपक्व किया जा सकता है। रस सौन्दयाभुति की बुनियाद है । भारतीय साहित्य व कला की धारा में रस का महत्पूर्ण स्थान है। जो हमारे जीवन को समृध्दि और आनन्द से परिपूर्ण कर देता है। ध्वन्यालोक ग्रन्थ में काव्य सिद्धांतों का व्यापक व गंभीर विवेचन किया है। ध्वनि का अर्थ 'नाद' से है। नाद से ही ध्वनि बनती है, जब इसमें विशिष्टता आती है ,तो उसे हम ध्वनि कहते है। आनन्द- बर्धन ने यह सिद्ध किया की ध्वनि की ऐसा तत्व है, जो स्फुट या अस्फुट सभी प्रकार के काव्य में उपस्थित होता है। बाद में कश्मीर के ही अभिनव गुप्त जिन्होंने इनका समर्थन किया इन्होने वेदांत के आधार पर अभिव्याक्तिबाद का निष्पादन किया। अभिनव गुप्त ने ध्वन्यालोक पर ध्वन्यालोक-लोचन नामक टीका

लिखी थी। अभिनव गुप्त द्वारा निष्पति व संयोग शब्द की गयी व्याख्या ही आज तक निर्दोष और मान्य है।

पर्वतीय क्षेत्र में जिस कला की उत्पत्ति हुयी उसे पहाड़ी चित्रकला शैली के नाम से जाना जाता है। जिसमे जम्मू, बसोहली, चंबा, कुल्लू, कांगडा, गुलेर, मंडी और पश्चिमी हिमालय के अन्य पहाड़ी क्षेत्र चित्रकला के केंद्र के रूप में प्राकृतिक तौर पर कश्मीर सदैव से परिपूर्ण रहा हैं। जम्मू –कश्मीर की हस्तशिल्प कला दुनिया में प्रसिद्ध है। जिसमे साहित्य कला दर्शन, भित्ति चित्रण व चित्र इत्यादि महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। प्राकृतिक दृश्यों से कश्मीर अपनी अनन्य सुषमा के कारण देश-विदेश के चित्रकारों को प्रभावित करता रहा है, जिसके परिणामस्वरुप यहाँ के चित्रकार हर समय अपनी चित्राकृक्तियों में प्राकृतिक दृश्यों को उतारने में लगे हुए है। कश्मीर क्षेत्र की कला अपने सौंदर्य व कलात्मकता से ओत –प्रोजाने जाते है। यह शैली रंगीन परिदृश्यों ,गहरे रंगों और पर्वतीय जीवन की छवियों को प्रस्तुत करती है। पहाड़ी चित्रकला में लोककला का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें अक्सर प्राकृतिक दृश्यों, पहाड़ी जीवन व जानवरों की छवियां दिखाई देती है। सांत रही है। कश्मीर की सौन्दर्यत्मकता का सीधा प्रभाव वहां के कलाकारों की कृतियों पर दिखाई देता है परन्तु यह प्रभाव समय के अनुसार कलाकारों की कृतियों में भी बदलता हुआ दिखाई देता है। और कुछ ऐसे कलाकार है जिन्होंने अपना आदर्श रूप प्रकट किया है, जिससे भविष्य के कलाकारों ने प्रेरणा लेकर अपने कला कर्म को चरितार्थ किया है। ऐसे में एक नाम मास्टर संसार चंद बारू का है, जो अपने कला कर्म व शैली से जाने जाते है। कश्मीरी चित्रकला को अग्रसर करने की दिशा में मास्टर संसार चंद बारू ने जो सराहनीय कार्य किया है, इतिहास में उसका उदारहण मिलना कठिन है।

मास्टर संसार चंद बारू के माता का नाम एकादशी व पिता का नाम धनपत बारू था जो की दरबारी राज पुरोहित थे ये असम के बारू समुदाय से सम्बंध रखते थे और उनके पूर्वज जम्मू आकर बस गये थे। जम्मू के पहले आधुनिक चित्रकार जिन्हें मास्टर जी के नाम से भी जाना जाता है, इनका जन्म 2 अक्टूबर 1902 में हुआ था व मृत्यु 2 जून 1995 में हुई थी, मास्टर जी 93 वर्ष की उम्र में दिवंगत हो गये। मास्टर संसार चंद बारु ने पहाड़ी चित्रकला शैली और आधुनिक कला को मिश्रित करके एक नयी कला को जन्म दिया ऐसा कहा जाता है, मास्टर जी को शुरू से पठन-पाठन में ज्यादा रूचि न थी उनके पिता जब यह देखा उनके पुत्र को शिक्षाशास्त्र में कम रूचि है तो उन्होंने एक प्रसिद्ध कलाकार ‘जगत राम चुनिया’ से चित्रकला सिखाने का अनुरोध किया जो उस समय के प्रसिद्ध कलाकार के रूप जाने जाते थे। जगत राम चुनिया ने मास्टर संसार चंद बारू को चित्रकला की बुनियादी शिक्षाएं प्रदान की। डोगरा आर्ट

म्यूजियम के पहले संश्थापक के रूप में भी जाना जाता है मास्टर जी ने कश्मीर परिदृश्य को चित्रित किया। मास्टर संसार चंद बारू ने भारतीय पौराणिक, प्राकृतिक दृश्य, व नायक-नायिका के विषयों पर आधारित चित्र बनायें जैसे- शिव जी, द्रश्य चित्रण,अमूर्त श्रीनगर का चित्रण, प्रकृति चित्रण इत्यादि। इन्होंने जल रंग व तैल रंग के माध्यमों के द्वारा अपने भावों को चित्रों में चित्रित किया। कहा जाता है कि मास्टर संसार चंद बारू को शिष्यों द्वारा 'मास्टर जी 'की उपाधि मिली।

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन

मैंने कलाकार के परिवारीजन से साक्षात्कार किया तत्पश्चात परिवारीजन के द्वारा मुझे मास्टर संसार चंद बारू से सम्बंधित जानकारी दी व उनकी मूल कृतियों को भी मेरे सम्मुख रखा। लेखक **कुसुम भूरिया दत्ता, ऋषन् भारद्वाज 'ऋषभ'** द्वारा लिखित **'कश्मीर इतिहास और संस्कृति'** से ज्ञान प्राप्त किया। लेखक **मोहन कृष्ण दर** द्वारा लिखित **पुस्तक 'मनोरम कश्मीर'** से मुझे कश्मीर की लोक कला के बारे में जानकारी मिली। लेखक **विनोद भारद्वाज** द्वारा लिखित '**बृहद आधुनिक कला कोश'** का अध्ययन किया। लेखक **गैरोला वाचस्पति** द्वारा लिखित **भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास** का अध्ययन किया। अनुसंधानकर्ता को अपने विषय से जुड़े साहित्यों का पुनरावलोकन करना अति महत्वपूर्ण है यह उस क्षेत्र से सम्बंधित होता है जिस विषय पर शोध कार्य किया जा रहा होता है। इसका प्रमुख उद्देश्य तथ्यों के संकलन से ज्ञान प्राप्त करना हैं मैंने अपने शोध हेतु कलाकार के परिवारीजनों से साक्षात्कार किया जिससे मुझे ज्ञात हुआ मास्टर संसार चंद बारू एक उत्कृष्ट व श्रेष्ठ कलाकारों में से एक थे। मैंने बहुत से संग्राहलयों का भ्रमण किया और कुछ पुस्तकों का अध्ययन किया। कलाकार मास्टर संसार चंद बारू ने अपने कला जीवन में बहुत सी कृतियाँ बनाई। इन्होनें कश्मीर में डोगरा आर्ट गैलरी की स्थापना की, बाद में इसका नाम डोगरा आर्ट म्यूजियम हो गया। जम्मू में कला को जीवित रखने व संग्रहीत करने का अथक प्रयास किया। कलाकारों को प्रोत्साहित करने का हर संभव प्रयास किया। कश्मीर के कलाकार मास्टर संसार चंद बारू ने डोगरा आर्ट गैलरी को स्थापित कर इस क्षेत्र को एक अलग पहचान प्रदान की।

परिकल्पना

परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ है – पूर्व चिंतन। परिकल्पना एक प्रकार की अतः दृष्टि है या हम कह सकते है वह क्षमता जिसके आधार पर तथ्यों के अंतर-सम्बन्धों के विषय में अनुमान व निष्कर्ष निकाल लिया जाता है अपने शोध प्रवंध को

दोष रहित प्रस्तुत करने के लिए शोध परिकल्पना तैयार करना अति महत्पूर्ण होता है। मेरे शोध प्रवंध का विषय है – **'कश्मीरी चित्रकार मास्टर संसार चंद बारू के चित्रों का कलात्मक अध्ययन'** मास्टर संसार चंद बारू ने अपने जीवन काल में कला क्षेत्र को एक अलग पहचान दी, इन्होनें अपने कलाकृतियों में कश्मीर के सौन्दर्य व लघु चित्र शैली को बहुत ही सुचारूरूप से अंकित किया, मैं कश्मीरी चित्रकार मास्टर संसार चंद बारू के चित्रों का कलात्मक अध्ययन करुँगी।

उद्देश्य – इस शोध के अनुसार उत्तर भारत की आधुनिक कला में मास्टर संसार चंद बारू के चित्रों का कलात्मक अध्ययन के कला कृतियों का कलात्मक हेतु प्रमुख **उद्देश्य** निम्न लिखित है-

कलाकार की शिक्षा व जीवन यात्रा का वर्णन करना।

इस शोध प्रबन्ध के द्वारा में कलाकार की कृतियों के विषय तथा विभिन्न प्रकार की तकनीकियों का अध्ययन करना।

कलाकृतियों का कलात्मक पक्ष प्रस्तुत करना।

कश्मीर की पुरातन कला को उजागर करना।

कश्मीर के आचार्यो के सिधान्तों और उनके कला से सम्बंधित दार्शनिक विकारों को प्रस्तुत करना भरत मुनि, आनंद वर्धन व अभिनव गुप्त।

मास्टर संसार चंद बारू की कला का वर्तमान समय के कलाकारों पर प्रभाव।

कलाकार मास्टर संसार चंद बारू ने अपने कला जीवन में कई प्रदर्शनियाँ की।

चर

मेरे शोध प्रबंध के चरों के आधार सूत्र निम्नलिखित है।

आश्रित चर

परतन्त्र चर

संस्था का भ्रमण व संस्था से सम्बंधित व्यक्तियों से साक्षात्कार

डोगरा आर्ट म्यूजियम का भ्रमण/पुस्तकालयों का भ्रमण

कला के तत्व

कला के सिद्धान्त

कलाकृतियाँ

कार्यप्रणाली

अनुसंधान अभिकल्प – मेरा शोध कार्य वर्णात्मक अनुसन्धान पर आधारित रहेगा। इस शोध कार्य में कलाकार की कलाकृतियों का कलात्मक अध्ययन और उनका कला जगत में योगदान पर आधारित रहेगा।

प्रदत्त संकलन - प्रदत्त का संकलन प्राथमिक व द्वितीयक स्रोत पर आधारित रहेगे।

प्राथमिक स्रोत मास्टर संसार चंद बारू की कलाकृतियाँ व परिवारीजन से साक्षात्कार।

द्वितीयक स्रोत पुस्तकें , पुस्तकालयों का भ्रमण , संग्राहलयों , पत्र-पत्रिकाये,लेख, व इन्टरनेट वेबसाइट।

प्रतिदर्श आकार मैंने शोध कार्य हेतु लगभग 100-150 प्रतिदर्शों का चयन किया है

प्रद्त्तो के एकत्रीकरण की प्रविधि

प्रदत्त एकत्रीकरण की प्रविधि साक्षात्कार व अवलोकन पर आधारित रहेगी।

सीमायें

संसार चंद बारू के दिवंगत होने की बजह से मैं उनका साक्षात्कार नहीं ले सकती हूँ।

आधुनिक युग में अध्ययन की प्रासंगिता

इस शोध कार्य से आधुनिक भारतीय चित्रकार के कला कर्म व कृतियों का कश्मीर क्षेत्र महत्वपूर्ण पक्षों को स्पष्ट किया जायेगा। इसके फलस्वरूप मेरा प्रवंध भविष्य के शोधार्थियों हेतु ज्ञान अर्जन में सहायक सिद्ध होगा।

कश्मीरी चित्रकार मास्टर संसार चंद बारू के चित्रों का कलात्मक अध्ययन

विषय-सूची

भूमिका – भारतीय आधुनिक चित्रकला का सिंहावलोकन

प्रथम अध्याय – जम्मू और कश्मीर का संक्षिप्त परिचय

सांस्कृतिकता के आधार पर

कला के आधार पर

द्वित्तीय अध्याय – मास्टर संसार चंद बारू का जीवन परिचय

शिक्षा

कला क्षेत्र व प्रदर्शिनियाँ

कला सम्मान

तृतीय अध्याय – मास्टर संसार चंद बारू का कला पथ

विषय

माध्यम

तकनीक व शैली

चतुर्थ अध्याय – मास्टर संसार चंद बारू की कलाकृतियों में रसानुभूति

सौदर्यात्मक पक्ष

कलात्मक पक्ष

पंचम अध्याय – मास्टर संसार चंद बारू का आधुनिक कला में प्रासंगिकता एवं योगदान

उपसंहार

परिशिष्ट –

सन्दर्भ

Reference

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Bibliography

पत्र-पत्रिकायें

वेबसाइट

कलाकार से सम्बंधित छाया चित्र

चित्र फलक

अनुसंधान अभिकल्प

भूमिका

मैं अपने शोधकार्य हेतु विषय मास्टर संसार चंद बारू की भूमिका के अंतर्गत आधुनिक भारतीय चित्रकला अध्ययन

करना।

प्रथम अध्याय

इसके अंतर्गत जम्मू और कश्मीर की सांस्कृतिकता व कलाओं को आधार बनाकर अध्ययन करना।

द्वितीय अध्याय

इस अध्याय के अंतर्गत कलाकार का जीवन परिचय पर प्रकाश डालते हुए उनकी शिक्षा, कला क्षेत्र, प्रदर्शनियाँ व उनको प्राप्त सम्मान का अध्ययन करना।

तृतीय अध्याय

इस अध्याय के अंतर्गत कलाकार संसार चंद बारू के कला पथ का वर्णन करते हुए उनकी कलाकृतियों के विषय, माध्यम, तकनीक व शैली पर विस्तारपूर्वक उसका वर्णन करना।

चतुर्थ अध्याय

इस अध्याय के अंतर्गत शोध विषय से सम्बंधित कला कृतियों का सौंदर्यात्मक पक्ष और कलात्मक पक्ष के आधार पर अध्ययन करना।

पंचम अध्याय

शोध सम्बंधित तथ्यों के आधार पर मास्टर संसार चंद बारू के चित्रों का आधुनिक कला में प्रासंगिकता एवं योगदान का अध्ययन करना।

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

'ऋषभ' दत्ता कुसुम भूरिया भारद्वाज ऋषन् - *कश्मीर इतिहास और संस्कृति*

कृष्ण दर मोहन - *मनोरम कश्मीर*

भारद्वाज विनोद - *2006 , बृहद आधुनिक कला कोश,* वाणी प्रकाशन

जोशी ज्योतिष - *2010, आधुनिक भारतीय कला*

वाचस्पति गैरोला - *1972 , भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास,* इलाहबाद

दिया पियूष - *2010, कला भारती (खण्ड : क),* ललित कला अकादमी

Bibliography

Arnason H. Harvard, Mansfield Elizabeth - 2013, *History of Modern Art Painting, sculpture, architecture, photography, Pearson*.

Frowde Henry - 1895, *The valley of Kashmir* , oxford University press ware house amen corner, London.

Jeratha Asoka - 1983, *Folk Art Of Duggar* , Atlantic Publishers & Distributors.

Internet Website

https://autarmota.blogspot.com/2014/11/sansar-chand-baru-first-modern-painter_30.html

https://ignca.gov.in/events/six-days-painting-camp-workshop-on-patnitop-with-active-participation-of-senior-artists-from-all-over-india-and-school-children-for-the-promotion-and-awareness-of-patnitop-its-importance-and-prese-2/

https://www.dailyexcelsior.com/tributes-paid-to-master-sansar-chand-baru/

https://earlypostdaily.com/index.php/2022/02/23/smvdu-ignca-organised-a-webinar-on-eternal-impressions-of-the-artists-from-jk/

चित्रफलक

चित्र संख्या- 1
शीर्षक - डोगरा की दुल्हन
माध्यम – जल रंग
आकार – 8.3”X11.7”
चित्र संग्रह – अनुराधा ऋषि (चित्रकार की पुत्री)

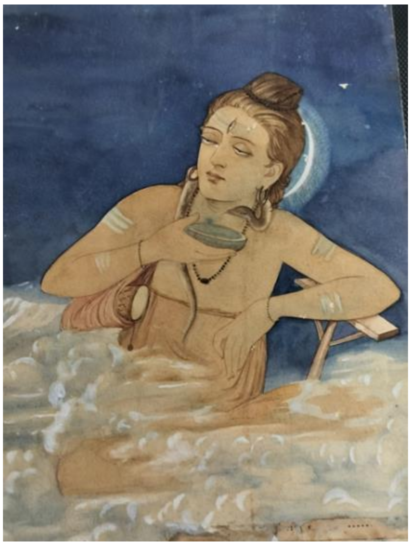

चित्र संख्या- 2
शीर्षक- शिव
माध्यम – जल रंग
आकार – 8.3"X11.7"
चित्र संग्रह – अनुराधा ऋषि (चित्रकार की पुत्री)

चित्र संख्या- 3
शीर्षक- व्यक्ति चित्रण
माध्यम – जल रंग
आकार –8.3"X11.7"
चित्र संग्रह अनुराधा ऋषि (चित्रकार की पुत्री)

चित्र संख्या- 4
शीर्षक- शिव शक्ति
माध्यम – जल रंग
आकार –8.3”X11.7”
चित्र संग्रह- अनुराधा ऋषि (चित्रकार की पुत्री)

चित्र संख्या- 5
शीर्षक – बसंत बहार
माध्यम – जल रंग
आकार –23.4”X16.5”
चित्र संग्रह -अनुराधा ऋषि (चित्रकार की पुत्री)

चित्र संख्या- 6
शीर्षक - परिदृश्य
माध्यम – जल रंग
आकार –16.5”X23.4”
चित्र संग्रह -अनुराधा ऋषि (चित्रकार की पुत्री)